मोहल्ला कक्षा और समुदाय : ये साझेदारी रंग लाएगी
(प्राथमिक शाला रुसल्ली के अनुभव)

अरविन्द जैन एवं मोहम्मद फ़ैज़

समुदाय और स्कूल के सम्बन्धों को लेकर हमेशा ही एक द्वन्द्व की स्थिति रही है। स्कूल एकांगी जगह की तरह देखा जाता रहा है जिसमें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और उसमें योगदान से समुदाय का कोई वास्ता नहीं रहा। इसके प्रयास किए जाते रहे हैं कि स्कूल और समाज में साझापन बने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में इसका फ़ायदा हो। इधर पिछले एक-डेढ़ साल से पूर्ण तालाबन्दी में जिस तरह से स्कूल की पूरी प्रक्रिया बन्द पड़ी है, समुदाय अपनी पहल से इसे शुरू करने और सहयोग करने के लिए आगे आया है। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई एक साझा चिन्ता के रूप में उभरी है। इस आलेख में अरविन्द जैन और मोहम्मद फ़ैज़ ने भोपाल के बैरसिया ब्लॉक की प्राथमिक शाला रुसल्ली में शिक्षक और समुदाय की इसी साझेदारी का अनुभव साझा किया है। सं.

शासकीय प्राथमिक शाला रुसल्ली, हर्राखेड़ा संकुल केन्द्र (बैरसिया ब्लॉक) से लगभग 3 किमी की दूरी पर बसे हुए रुसल्ली गाँव में स्थित है। भोपाल से बैरसिया रोड पर हर्राखेड़ा की पुलिया पार करके बायीं तरफ़ लगभग ढाई किमी चलना होता है और पहला बायाँ मोड़ मुड़ने पर गाँव पहुँचा जा सकता है। लगभग 200 से अधिक साल पुरानी इस बसाहट में मुस्लिम आबादी ज़्यादा है।

रुसल्ली में शिक्षक अनूप भार्गव मोहल्ला क्लास संचालित करते हैं जिसमें कक्षा 1 से 5 तक के लगभग 25 से 30 बच्चे प्रतिदिन आते हैं। वैसे इस स्कूल में 120 बच्चे नामांकित हैं। सितम्बर के आख़िरी सप्ताह में अनूपजी से बात की कि बच्चे इन कक्षाओं में बेहतर तरीक़े से पढ़ना-लिखना सीख सकें, इसके लिए मिलजुल कर प्रयास करना होगा। सर की इस कार्य को करने में सहमति थी और उनका भी मानना था कि बच्चों को और बेहतर तरीक़े से कैसे पढ़ाएँ ताकि वो अपनी कक्षा के अनुरूप पढ़ाई कर सकें। अब तक अनूपजी को कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को एक साथ ही पढ़ाना पड़ता था। सर के साथ मिलकर तय किया कि हम बच्चों को उनके स्तर अनुसार पढ़ाएँ। हमने कविता पोस्टरों से शुरुआत की। कुछ ने शब्द जोड़-जोड़कर पढ़ने की कोशिश की, कुछ ने पूरे-पूरे शब्द पहचाने तो कुछ सिर्फ़ याद करके कविता दुहराते हैं। मोहल्ला कक्षा में होने वाली इस रोचक गतिविधि के चलते आने वाले बच्चों की तादाद बढ़ती गई। हफ़्ते-दस दिन यही सिलसिला चला। इसके परिणामस्वरूप कई बच्चे कविता पोस्टर को अनुमान लगाकर पूरा पढ़ लेते हैं। जो बच्चे सिर्फ़ बोलने पर कविता दुहरा रहे थे, अब कविता पोस्टर के कुछ शब्दों को पहचान लेते हैं।

हमीद भाई का घर बना विद्यालय

मोहल्ले में जिस घर में कक्षा चलती है, शुरुआत में उस घर के सदस्य हमीद भाई से मोहल्ला कक्षा की योजना के बारे में प्रधानाध्यापक निसार सर ने बात की। इसके बाद हमीद भाई ने अपने घर की दालान (घर का बाहरी हिस्सा)





और बिछात बच्चों के बैठने के लिए दे दी। पढ़ाई के दौरान किसी भी चीज़ की ज़रूरत होती है तो वे सहर्ष दे देते हैं। शिक्षक के बैठने के लिए वे कुर्सी आदि भी कक्षा शुरू होने के पहले ही रख देते हैं।

यहाँ पर बच्चे अपनी मर्जी से आते हैं, पढ़ते हैं, मस्ती करते हैं और पूरे घर में घूमते भी हैं। घर वालों के लिए रखे पानी के घड़े से बिना झिझक पानी पीते हैं और घर का बाथरूम भी यूज़ करते हैं। ख़ुद को आज़ाद महसूस करते हैं। घर के सदस्यों ने कभी भी कोई आपत्ति नहीं की। यह परिवार बड़ा है, इसके बाद भी बच्चों के लिए ओपन है। जब तक (2 घण्टे) यहाँ बच्चे बैठे होते हैं, परिवार के सदस्य उस जगह का उपयोग नहीं करते हैं। घर के बुज़ुर्ग भी यह नहीं कहते कि बच्चे हल्ला कर रहे हैं, या हम डिस्टर्ब हो रहे हैं। घर के बुज़ुर्ग सदस्य हामिद ख़ानजी, जो कि लगभग 70 साल के होंगे, मोहल्ला कक्षा के सन्दर्भ में कहते हैं : "ये तो हमारे ही बच्चे हैं। पढ़-लिख लेंगे तो हमें ही मदद मिलेगी। पढ़ाई से बेहतर तो कुछ भी नहीं है। पहले तो बच्चे दिनभर घूमते रहते थे। ये पढ़ सकें, इस कारण इनको जगह दी है। मास्टरजी रोज़ आते हैं और मेहनत से भी पढ़ाते हैं। हमारे बच्चों के लिए ही तो यह सब कर रहे हैं। इनकी मदद करना हमारा भी फ़र्ज़ है।"

शाला में समुदाय की भागीदारी का यह एक अच्छा उदाहरण है। गाँव के लोग बच्चों के पढ़ने के लिए स्थान उपलब्ध करा रहे हैं। इस तरह की परिस्थिति में भी शिक्षकों द्वारा घर-घर जाकर कक्षाएँ संचालित करने को लेकर ग्रामीणों में भी सम्मान का भाव है। मोहल्ला क्लास में समुदाय की भागीदारी और बेहतर बनाने के लिए इस तरह के और भी उदाहरणों की ज़रूरत है।

मोहल्ला पुस्तकालय की शुरुआत

योजना अनुसार शुरुआत में यह तय किया गया कि हम पुस्तकालय की किताबों से बच्चों को कहानियाँ पढ़वाएँ और उनसे जुड़ी हुई गतिविधियाँ करवाएँ। इससे बच्चों का पढ़ने की ओर रुझान बढ़ेगा। और फिर जब बच्चे वर्कबुक पर काम कर लेंगे तो उसके बाद में एक कहानी सुनाकर उसपर चर्चा की जाएगी। इसका



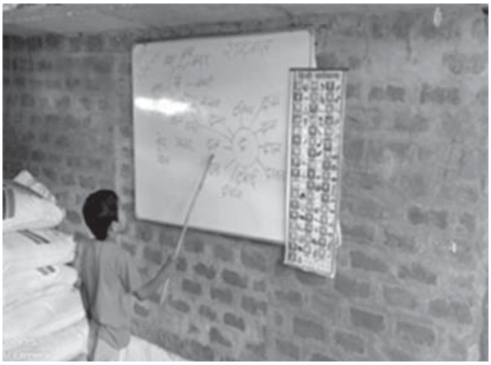
परिणाम इस अर्थ में सुखद रहा कि बच्चे बेसब्री से हमारा इन्तज़ार करने लगे हैं कि अब उन्हें हर बार एक नई कहानी सुनने मिलेगी।

बच्चों का रुझान देखकर यह समझ में आया कि बच्चों में पुस्तकालय की किताबों को पढ़ने की इच्छा जागृत हो रही है। अतः तय किया कि हम बच्चों को नियमित रूप से पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने के लिए दें। चूँकि बच्चे मोहल्ला क्लास के बाद अधिकांश समय खेलने में गुज़ारते थे, अतः तय हुआ कि हम मोहल्ले से ही किसी बच्चे को पुस्तकालय संचालन की ज़िम्मेदारी के लिए तैयार करें जो बच्चों को पढ़ने के लिए किताबें दे सके। इसके लिए हमने समुदाय में सम्पर्क किया और गाँव के युवाओं से बात की। इसी दौरान फरहाना से बात की कि क्या वह पुस्तकालय का संचालन करने में मदद करेगी? फरहाना कक्षा 10 में पढ़ती है। इस समय उसका स्कूल भी बन्द था। फरहाना ने शुरुआत में थोड़ी झिझक दिखाई, पर जब मैंने फरहाना से पुस्तकालय के सम्बन्ध में विस्तार से बात की तो वे पुस्तकालय संचालन के लिए तैयार हो गईं। मैंने अनूपजी और स्कूल के प्रधानाध्यापक निसार ख़ानजी से बात की और स्कूल के कमरों में बन्द किताबों को निकलवाया। कुछ किताबें फरहाना को पढ़ने के लिए दी गईं और उन किताबों के साथ किस प्रकार की गतिविधियाँ कर सकते हैं, इस बारे में संक्षेप में उसे बताया गया। अवलोकन के लिए हमने फरहाना को कक्षा में बैठने के लिए कहा। इसके बाद बच्चों के स्तर के अनुसार फरहाना को लगभग 30 किताबें दी गईं। तय किया गया कि इन किताबों को बच्चों को पढ़ने के लिए देंगे और उसपर बच्चों के साथ बातचीत करेंगे। इन किताबों में कहानी, कविता के साथ-साथ अन्य बाल सुलभ विषयों पर आधारित किताबें शामिल थीं। बच्चों को किताबें देने के लिए इशु रजिस्टर दिया गया। बच्चे फरहाना से किताबें लेने लगे और फरहाना भी इन किताबों और बच्चों के साथ बेहतर तरीक़े से काम कर पा रही है।

जैसे-जैसे कक्षा नियमित होती गई और बच्चे पढ़ने की ओर ध्यान देने लगे तो एक बोर्ड की ज़रूरत सामने आई। मोहल्ला क्लास जिस जगह चल रही है उस जगह बोर्ड नहीं था जिसकी मदद से बच्चों को बेहतर तरीक़े से समझाया जा सके। हमने प्रधानाध्यापकजी से बात की कि क्या स्कूल फ़ण्ड से एक वाइटबोर्ड ले सकते हैं। उन्होंने अपनी सहमति जताई और कुछ दिनों में ही एक वाइटबोर्ड ले लिया गया। बोर्ड की मदद से बच्चों को समझाने और कक्षा में उनकी रुचि बनाए रखने में सहूलियत होने लगी। अनूपजी ने माना कि बोर्ड के आने से बच्चों को और बेहतर तरीक़े से पढ़ा एवं समझा पा रहे हैं। अब बच्चे भी बोर्ड पर मार्कर से अपनी बात लिख पाते हैं। सबके सामने आकर लिखने की उनकी शुरुआती झिझक धीरे-धीरे ख़त्म हो चुकी है।

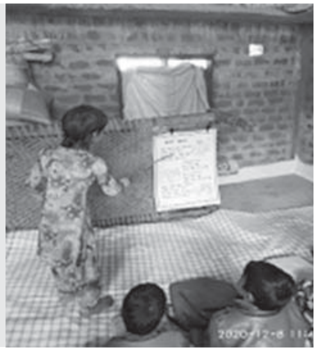
शिक्षण गतिविधियाँ

पाठ्यपुस्तक के साथ ही पुस्तकालयों की कविताओं और कहानियों का उपयोग करके बच्चों के लिए पढ़ना-लिखना सीखना बेहतर कैसे बनाएँ, इस बिन्दु पर शिक्षक से बात की और उनके साथ मिलकर योजना बनाई। ऐसे बच्चे जो पढ़ने-लिखने के शुरुआती स्तर पर थे, उनके साथ कविता पोस्टर, कविता पट्टी, वाक्य पट्टी और शब्द कार्ड का उपयोग किया गया और गणित में गिनती माला, तीली बण्डल आदि का उपयोग करके बच्चों के साथ गिनती, जोड़-घटाना और स्थानीय मान पर काम शुरू किया









गया। इसके साथ ही बच्चों की पाठ्यपुस्तकें और वर्कबुक पर भी काम चलता रहा।

शिक्षकों की पहल

अनूप भार्गव की पहली नियुक्ति प्राथमिक शाला रुसल्ली में 2003 में हुई थी। लॉकडाउन के पहले वे कक्षा 4 और 5 को पढ़ाते थे। पर 'हमारा घर हमारा विद्यालय' के शुरू होने पर कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के एक साथ आने पर पूरे समूह को संचालित करने में समस्या आने लगी। तब तय किया गया कि बच्चों के समूह बना लेते हैं और स्तर के अनुसार उन्हें समूह में पढ़ाते हैं। जो बच्चे पढ़ने-लिखने के शुरुआती स्तर पर थे उनके साथ कविता-कहानी, शब्द-चित्र, गिनती माला आदि के साथ काम शुरू किया गया। बाद में कविता पोस्टर, कविता पट्टी आदि का उपयोग करके बच्चों के साथ भाषा पर काम शुरू किया गया। अनुभव किया गया कि जो बच्चे पढ़ने में कमज़ोर थे या जिन्हें दिक़्क़त आ रही थी, इस तरह की गतिविधि में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे थे और भागीदारी कर रहे थे। अनूपजी को इस तरह की गतिविधि में बहुत मज़ा आया। वे स्वयं इससे सीख रहे थे। अनूपजी ने माना कि इस तरह की गतिविधि से बच्चे काफ़ी तेज़ी से सीखते हैं। वे अब स्वयं ही इस तरह की गतिविधि करने लगे हैं। अनूपजी इस तरह की सामग्रियों का इस्तेमाल करने के साथ-साथ अब बाइलिंगुअल किताबों की ज़रूरत महसूस करते हैं और इनकी मदद से वे हिन्दी और अँग्रेज़ी भाषा की कक्षा को सहज और रोचक बनाना चाहते हैं। साथ ही वे अब वर्कशीट का भी इस्तेमाल करने लगे हैं। इसके लिए वे पहले बच्चों को बताते हैं कि क्या करना है और क्यों। अभी लगभग 20 बच्चे इस सेंटर में नियमित आ रहे हैं। अनूपजी के आग्रह पर हमने उनके स्कूल में कुछ और किताबें भी दी हैं। अनूपजी बहुत नियमित कक्षाएँ संचालित कर रहे हैं और उन्होंने बताया कि जुलाई माह से अभी तक वे सिर्फ़ 1 दिन की छुट्टी ले पाए हैं। मैंने भी फ़ील्ड विज़िट के दौरान देखा कि गाँव में सभी लोग इनका सम्मान करते हैं। जब बच्चे केन्द्र में नहीं आते हैं तो सर बच्चों को लेने उनके घर जाते हैं। परिणामतः हर बच्चे के



घर में क्या चल रहा है, उसे भी समझते हैं। अभी फ़िलहाल यह स्थिति है कि वे स्वयं अब हमें फ़ोन करते हैं और यदि कोई नई गतिविधि करवानी हो तो उसे कैसे करवाना है, उसपर चर्चा करते हैं। साथ ही टीएलसी समूह में वे अपनी गतिविधियों को डालते हैं जिससे ब्लॉक के अन्य शिक्षक भी देख पाएँ और इस दिशा में अपने प्रयास कर पाएँ।

बातचीत के दौरान अनूपजी का कहना रहता है कि केवल दो ही घण्टे केन्द्र में आने के कारण बच्चों की पढ़ाई नियमित रूप से नहीं हो पाती है। आने वाले दिनों में उनकी योजना बच्चों को स्कूल में ही सुबह 10:30 से अपराह्न 4:00 बजे तक बुलाने और पढ़ाने की है। इससे बच्चों की पढ़ाई नियमित रूप से हो पाएगी। अपनी समझ विकसित करने के लिए उन्होंने हमसे *एनसीएफ़ 2005, प्रेमचंद की कहानियाँ* आदि किताबें पढ़ने के लिए माँगी हैं। उनका कहना है, हम पहले मोहल्ला कक्षाएँ चला तो रहे थे पर जब से फ़ाउण्डेशन का सहयोग मिला है हमें क्या करना है और कैसे करना है, इस बारे में दिशा मिली है। चूँकि वे स्वयं भी नया करने और सीखने में दिलचस्पी रखते हैं, अत: प्रधानाध्यापक से बात करके बहुत-सी शिक्षण सहायक सामग्री भी मँगा ली है और नियमित रूप से इसका उपयोग कर रहे हैं।

इस काम को देखते हुए इसी स्कूल के राजीव भार्गव सर भी सहयोग के लिए तैयार हुए उन्होंने काम को आगे बढ़ाने के लिए चर्चा की, सुझाव माँगे और हमारे साथ मिलकर योजना बनाई। वे गणित में सामग्री का इस्तेमाल करते हुए संख्या की व्यवहारिक समझ बनाने का प्रयास करते हैं। अब बच्चे गणित में स्तर अनुसार 50 से 1000 तक की संख्याओं को समझ लेते हैं। संख्या में अंकों के स्थान का मान भी उन्हें समझ में आता है।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक रुसल्ली गाँव के ही निवासी हैं। उनकी भी पहली पोस्टिंग इसी स्कूल में हुई थी। वे सन् 1998 से इसी स्कूल



में हैं। उन्होंने बताया कि इस स्कूल की स्थापना 1955 के आसपास हुई थी और अभी स्कूल में 120 बच्चे हैं जिनमें से 7 अनुसूचित जाति के और बाक़ी मुस्लिम समुदाय से आते हैं।

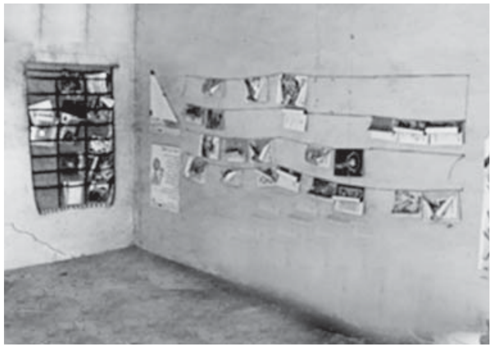
सर का कहना है कि ये बच्चे नियमित रूप से पढ़ने आते हैं। इसी गाँव के होने के कारण पूरे समुदाय के लोग उनकी बात को सुनते और मानते हैं। समुदाय के साथ सर के सम्बन्ध बहुत ही बेहतर हैं और हमने देखा है कि मोहल्ला कक्षाओं में बच्चों को बैठने के लिए जो भी जगह चाहिए वह सर के प्रयासों से उपलब्ध हो जाती है।

पुस्तकालय से पुस्तक निकालना हो या फिर बच्चों के लिए ब्लैकबोर्ड ख़रीदना हो या शिक्षक सहायक सामग्री; ख़रीदनी हो प्रधानाध्यापक की कोशिश रहती है कि उक्त सामग्री उपलब्ध हो जाए।

अभी हाल ही में हमने देखा कि किताबें एक रस्सी पर टँगी हुई हैं जिस कारण वे मुड़ रही थीं। उनसे इसपर बात हुई कि स्कूल में पर्याप्त कमरे हैं तो क्या हम एक कमरे को पुस्तकालय कक्ष नहीं बना सकते हैं? इसके बाद

पूनम : कक्षा 8 की छात्रा है और रुसल्ली से लगभग 3 किमी दूर एक शासकीय स्कूल में पढ़ती है। वह भी यहीं पढ़ने आती है। जब मैंने पूछा कि तुम अपने स्कूल क्यों नहीं जातीं तो उसका कहना था कि यहाँ ज़्यादा अच्छा लगता है। पूनम से बात कर हमने उसे अपने अनुभव लिखने को कहा, जैसे– स्कूल में पहली बार कैसा लगा, लॉकडाउन के क्या अनुभव रहे, आदि। इसपर उसने बहुत अच्छे-से लिखा। बीच-बीच में वह छोटे बच्चों को पढ़ने में भी मदद करती है। पूनम का भाई अमित भी कक्षा 5 में पढ़ता है और मोहल्ला क्लास में आता है। आलिया, इकरा, मोहसिन जैसे बच्चों की तरह ही इनका भी इस घर में उसी तरह का अधिकार है।

सर मिलकर पुस्तकालय के लिए हमने कमरा तय किया। सर का कहना था कि वे इस कमरे को ठीक करवा देंगे और किताबें रखने के लिए रैक भी ले लेंगे।



तालाबन्दी की इस विषम परिस्थिति में समुदाय जिस तरह बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए ख़ुद-ब-ख़ुद आगे आकर शिक्षकों का सहयोग कर रहा है, उससे इस बात की उम्मीद बँधती है कि स्कूल अभी भले ही जल्दी न खुलें, पर समुदाय और स्कूल की नातेदारी जो बन गई है, यह आगे अच्छे परिणाम लाएगी। सरकारी स्कूल व्यवस्था में समुदाय और स्कूल के इस परस्पर सहयोग वाले सम्बन्ध का एक अभाव बना ही रहता था, वह इस कोरोना महामारी के बहाने कुछ हद तक ही सही कम तो हुआ है।

अरविन्द जैन, लगभग 22 सालों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। बाल साहित्य में गहरी दिलचस्पी है। कामकाजी और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ खेलना, बातचीत करना और उनके साथ समय बिताना अच्छा लगता है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : arvind.jain@azimpremjifoundation.org

फ़ैज़ मोहम्मद कुरैशी (फ़ैज़), पिछले डेढ़ दशक से सामाजिक न्याय व वंचित तबक़े के विकास के क्षेत्र में कार्यरत। विशेष तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन-अध्यापन, लेखन व समतावादी संगठनों जैसे कार्यों में अधिक संलग्नता रही है। विगत 8 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ाव।

सन्दर्भ : faiz.qureshi@azimpremjifoundation.org